डॉ सुषमा देवी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,बद्रुका कॉलेज
काचीगुडा, हैदराबाद-27, तेलंगाना

किसी ने सराह दिया

वो बड़ी देर से कसमसा रही थी
मन ही मन उसे सता रही थी
उसे घायल किए जा रही थी
किसी भी तरह त्राण न पा रही थी

उन दिमागी नसों को धकियाने में
तड़पी बहुत राह बनाने में
कई दिन लगे मंजिल पाने में
कई दिन लगे उसे बाहर आने में

आखिर आ ही गई उनकी उंगलियों को
पकड़ कर
शब्द,बिंब और प्रतीक की बाहों को
जकड़ कर
लोगों की तीखी आलोचनाओं को
दरकिनार कर
कविता खुश हुई अपना आकार धर

किसी ने वाह-वाह किया
किसी ने टेढ़ी निगाह दिया
किसी ने सराह दिया
किसी ने दुत्कार दिया

दुनिया में आकर
खुद को पाकर
अपने रूप पर इतराकर
होठों से लग गई वो सबके मुस्कराकर